Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-IV ISSUE-II FEB. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

महादेवी वर्मा की काव्य साधना

- डॉ. लीला कर्वा

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हिंदी साहित्य की सुप्रसिध्द कवियत्री श्रीमती महादेवी वर्मा भारतीय नारी की गरिमा का प्रतीक है । छायावाद के आधार स्तंभों में महादेवी वर्मा का स्थान महत्वपूर्ण है । छायावाद के गीतकारों में उनका स्थान सर्वप्रथम आता है । बचपन से ही उनको कविता लिखने के प्रति रुची थी । सात वर्ष की अवस्था में उन्होंने कविता लिखी थी । महादेवीजी ने विपुल साहित्य की रचना की जिनमें पद्य और गद्य दोनों प्रकार की रचनाएँ है ।

इनके काव्य संग्रह है - निहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा.

महादेवी वर्मा के काव्य की विशेषताएँ :

1.वैयक्तिकता एवं रहस्यवाद -

महादेवी वर्मा ने अपने अन्तर्जगत के भावों की अभिव्यक्ति अपने काव्य में की है, वे स्वयं कहती है, गीत यदि दूसरे का इतिहास न कहकर वैयक्तिक सुख दुख ध्वनित करसके तो उसकी मार्मिकता विस्मय की वस्तु बन जाती है, इसमें संदेह नहीं है ।

उनकी निजी अनुभुतियों की अभिव्यक्ति उनके गीतकाव्य में चित्रित हुई है ।

नयन में जिसके जलद वह तृषित चालक हूँ
शालभ जिसके प्राण में वह निठुर दिपक हूँ ।

महादेवी वर्मा के काव्य में आध्यात्मिकता का रंग है । अद्वैतवाद के वेदांती स्वरुप को ग्रहण करने के कारण रहस्यात्मकता उनके काव्य में झलकती है । उनकी भक्ति में बाह्य पूजा का विधान नहीं । वे अपने प्रिय से भाव रुप से जुड़ी हैं ।

चित्रित तू मैं हुँ रेखा-क्रम
मधुर राग तू मैं स्वर संगम
तू असीम मैं सीमा का भ्रम
काया छाया में रहस्यमय
प्रेयसि प्रियतम का अभिनय क्या

महादेवी वर्मा ने अपने अंतर की साधिका को पूर्ण मान-सम्मान दिया है । वह स्वयं को अपने असिम प्रिय के कदापि छोटा नहीं मानती ।

मेरी लघुता पर आती जिस दिव्यलोक को क्रीडा
उनके प्राणों से पूछो वे पाल सकेंगे पीड़ा ?
उनसे कैसे छोटा है मेरा यह भिक्षुक जीवन ?
उनमें अनंत करुणा है मन में असीम सूनापन

2.वेदना तत्व :

अज्ञात प्रियतम के प्रति वेदना भाव की अभिव्यक्ति उनके काव्य में प्रमुखता से दिखाई देती है । वेदना और करुणा की प्रधानता के कारण ही महादेवीजी को आधुनिक मीरा कहा जाता है ।

महादेवीजी अपने प्रियतम से मिलने के लिए व्याकुल हैं -

यह कैसी छलना निर्मम
कैसा तेरा निष्ठुर व्यापार
तुम मन में हो छिपे
मुझे भटकाता है । है सारा संसार
वो अपने प्रिय को पुकारती है
जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करुणा कितने संदेश, पथ में बिछ जाते बन पराग
गाता प्राणों का तार-तार, अनुराग भरा उन्माद राग
आँसू लेते वे पद पखार

महादेवी का प्रियतम अलौकिक, चिरसुन्दर और असीम है । वे निरंतर उसी के विरह में व्यथित हो अपनी हदयगत वेदना और दुःख के गीत गाती है ।

तुमको पीड़ा में ढुँढा
तुममें ढुँढुंगी पीड़ा

3.वैश्विकता के दर्शन -

बचपन से ही भगवान बुध्द के प्रति एक भक्तिमय अनुराग होने के कारण बुध्द फिलासाफी से वे प्रभावित थी । दुःख मनुष्य का साथी है, दुःख ही मनुष्य का गुरु है । इसलिए आपने वेदना को चिरसुन्दर माना । हमारे मन की अगणित इच्छा आकांक्षाएँ कभी पूरी नहीं होती तो हम दुःखी हो जाते हैं । इसलिए भौतिक संसार की अपेक्षा आत्म संशोधन में आनंद की प्राप्ति होती है ।

क्यों अश्रु न हो श्रृंगार मुझे
लघु हदय में स्वर लहरी आनंद
हर स्वप्न स्नेह का चिर निबंध
हर पुलक तुम्हारा भाव बंध
निज साँस तुम्हारी रचना का
लगती अखंड विस्तार मुझे
हर पल रस का संसार मुझे

दुःख वेदना से हमें संसार से एकाकार होकर विश्व की करुणा को दूर करने की क्षमता मिलती है इसलिए वो कहती है

दूर है अपना लक्ष्य महान
एक जीवन एक पग समान
अलक्षित परिवर्तन की डोर
खींचती हमें इष्ट की ओर

4.प्रकृति का चित्रण -

महादेवी वर्मा ने अपनी मधुमय पीड़ा का प्रकाशन प्रायः ही प्रकृति के माध्यम से किया है

चुभते ही तेरा अरुण बान !
बहते कण-कण से फूट-फूट, मधुके निर्झर से सजल गान
इन कनक रश्मियों में अथाह, लेता हिलोर तम सिंधु जाग ।

अपने प्रिय के मिलने की तयारी के बावजुद उनका सपना साकार नहीं होता तो वो पुछती है, क्यों वह प्रिय आता पार नहीं !

मैं आज चुपा आयी चातक
मैं आज चुपा आयी कोकिल
कण्टकित मौलश्री हरसिंगार, रोके हैं अपने श्वासाशिथिल
सब उत्कंठा से आकुल हैं, प्रतीक्षारत हैं ।

5.भाषा सौंदर्य गेयता -

महादेवी का काव्य अनुपम सौन्दर्य से परिपूर्ण है । भाषा संस्कृति गर्भित, मधुर एवं कोमल है । उनके काव्य में प्रतीक और अलंकार का सुन्दर मेल है। कल्पना चित्रों की बहुलता, सरसता उनके काव्य में सहज रुप में प्रस्तुत होते हैं-

बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ
नींद भी मेरी अचल निस्पन्द कणकण में
कूल भी हूँ, कूलहीन प्रवाहिनी भी हूँ ।
नयन में जिसके जलद वह तृषित चातक हूँ ।
दूर तुमसे हूँ अखंड सुहागिनी भी हूँ ।

उनके काव्य में स्वर माधुर्य एवं नाद सौंदर्य की झलक है ।

वे मुस्कराते फूल नहीं जिनको आता है मुरझाना
वे तारों के दीप नहीं जिनको भाता है बुझ जाना ।

शब्द चयन सुन्दर और ललित है ।

स्नेह भरा जलता है झिलमिल मेरा यह दीपक मन रे
मेरे दृग के तारक में नव उत्पल का उन्मीलन रे

इस प्रकार हम देखते हैं कि आराधिका महादेवी ने विश्व को अभिभूत किया है और काव्य को महत्ता प्रदान की है ।

संदर्भ सूचि :

1. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास - राजनाथ शर्मा
2. संचारिका जून 2007 महादेवी वर्मा जन्मशती विशेषांक संपादक - नारायण वाकळे